॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥

असली
अथ
पंचक शांति

भाषा टीका विधि सहित

रचयिता :
प० रामस्वरूप शर्मा
मेरठ निवासी



प्रकाशक :
जवाहर बुक डिपो
(गुजरी बाजार वाली दुकान)
निकट आर्य समाज, स्वामीपाड़ा,
मेरठ ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

❋ श्रीसरस्वत्यै नमः ❋



अथ पंचक शान्ति

भाषा टीका सहित

सम्पादक–

पण्डित रामस्वरूप शर्मा

मेरठ निवासी ने पण्डितों के सुभीते के लिये बनाया



प्रकाशक एवं मुद्रक–

जवाहर बुक डिपो,

गुजरी बाजार, मेरठ।

संशोधित संस्करण) सम्वत् २०५६ मूल्य १५ रुपये

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अथ पंचक शान्ति

(सामग्री लिख्यते)

कुशा के पांच पुतले मनुष्याकार चूर्ण सूत्र के बांधे यव चूर्ण ऊपर लपेटे। ५ मूर्ति सोने की, ५ गज रक्त वस्त्र, ५ कुम्भ स्वर्णादि मृत्तिका पर्य्यन्त, गंगाजल, ६ अंगोछे, ६ नारियल, ३० सुपारी, सप्त धान्य, पूर्ण पात्र का लोटा या हंडला चावलों से भरा हुआ, दक्षिणा व १ अंगोछा, दूध ५०० ग्राम, पञ्चगव्य, पञ्चपल्लव, पञ्चामृत, ६ हार, फूल, एक गऊ, एक घड़ा वरुण (जल) का, गऊ और बछड़े के ऊपर को वस्त्र, १ लोटा, १ कटोरा, १ तांबे की पीठ, सोने के सींग, चांदी के खुर, १ दूध दुहने का पात्र, दक्षिणा यथा शक्ति, धूप १०० ग्राम, पचरंग २०० ग्राम, चावल २०० ग्राम, शतावर १०० ग्राम, दीपक, गंगा रज, १० सराईं, उड़द १०० ग्राम, दही १०० ग्राम, कुशा, ५ किलो लकड़ी, १० दीवले, रुई, सिन्दूर।

हवन सामग्री—चावल २५० ग्राम, जौ १ किलो ५०० ग्राम, घी १ किलो, भोज-पत्र, इन्द्र जौ, बूरा २५० ग्राम, मेवा २५० ग्राम, तिल २ किलो।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अथ पंचक शान्ति

दाह विधि

भाषा-टीका

पंचकों में जो मुर्दों का (दाह करें) यानी फूंकें तो इस विधि से फूंके कि पहले पांच (पुतले) कुशा के बनाकर मुर्दे के अंग में धरे—पहला सिर में, दूसरा सीधी कोख में, तीसरा बाईं कोख में, चौथा सूंडी में, पांचवां पांवों में धरे और फूंकते समय घी की पांच-पांच आहुति दे, पाँचों मन्त्रों से पहले सिर पर धनिष्ठा के मन्त्र से आहुति दे, (धनिष्ठा का मन्त्र)—

ओं व्वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्र मसि सहस्रधारम् । देवस्त्वा सवितापुनातु व्वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वाकामधुक्षः॥१॥

फिर शतभिषा के मन्त्र से सीधी कोख में आहुति दे। मन्त्र—

ओं वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्यस्कम्भ सर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्यऽऋतसदन्यसि व्वरुणस्यऽऋतसदन मसि व्वरुणस्यऽऋत-सदनमासीद ॥२॥

फिर पूर्वा भाद्रपद के मन्त्र से बाईं कोख में आहुति दे। मन्त्र—

ओं उतनाहिर्बुध्न्यः शृणोत्वजएकपात् पृथ्वी समुद्रः। विश्वे देवाऽऋतावृधोहुवाना-स्तामन्त्राः कविशस्ताऽवन्तु ॥३॥

फिर उत्तरा भाद्रपद के मन्त्र से सूंडी में आहुति दें। मन्त्र—

ओं शिवो नामासि स्वधितिस्तेपिता नमस्ते अस्तुमामाहिंᳬसीः। निवर्तयाम्या-युयेन्नाद्याय प्प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्प्रजास्त्वाय सुवीर्य्याय ॥४॥

फिर रेवती के मन्त्र से पांवों में पांचवीं आहुति दें। मन्त्र—

ओं पूषन्तव व्व्रतेव्वयन्नरिष्येम कदाचन। स्तोतारस्तइहस्मसि ॥५॥

तीसरे दिन पांच ब्राह्मणों से पांचों नक्षत्रों के मन्त्रों का गायत्री सहित जाप करावे। एकादशे के दिन हवन करे जितना मन्त्र जपवाया हो उसके दशांश मन्त्रों का हवन करे उसके दशांश का तर्पण और उसके दशांश का मार्जन करना चाहिए।

(तीर्थं गत्वा स्नानं कृत्वा शुद्धवासांसि परिधाय नित्यकर्म समाप्य)

तीर्थ पै जाकर स्नान करे और शुद्ध वस्त्र पहन कर नित्य क्रिया करे।

(श्राद्ध समीपे द्विजमाह्वयेत्)

श्राद्ध करने की जगह ब्राह्मण को बुलावे।

(ब्राह्मणन्चोत्तरमुख आसने उपविश्य)

पाधा उत्तर की तरफ को मुंह करके बैठे।

(प्रथम मृदमय वेदीं रचयित्वा)

पहले पीली मिट्टी की वेदी बनावे।

(नवग्रह स्थापनं कृत्वा)

उसमें चून से नवग्रह स्थापन करे।

(रङ्ग आकार सहितम्) रंग आकार सहित।

(वेदीकादेशाने गणेश ओंकारं श्री षोडशमातृस्तत्रैवघटं स्थापयेत्)

वेदी से ईशान कोण में फूल का आकार बनावे उसके ऊपर अन्न धरे अन्न के ऊपर घड़ा पानी का भरकर धरे उसमें आम की टहनी गेरे उस पर करवा पानी से भर कर धरे और करवे पर नारियल लाल कपड़े में लपेट कर या उसमें कलावा बांधकर धरे उसके समीप सतिये का आकार बनावे उस पर रोली के रंगे हुये चावल धरे उन चावलों पर गणेश जी का स्थापन करे। ओंकार श्री सोलह कोठे की गौर्य्यादि षोडश मातृ बनावे।

(ततः घटसमीपे दीपं मंडलाद् दक्षिणे कृष्णसर्पञ्च स्थापयेत्)

घड़े के समीप घी का दीवा बाले वेदी से दक्षिण में सर्प बनावे। यह ग्रहों के बनाने की विधि है।

(दक्षिणे होमवेदिकां निर्माय)

दक्षिण दिशा में हवन की वेदी बनावे।

(ततो होम वेदिकायाम् उत्तरदिशि पंच-वेदिका हस्तमात्रपरिमिताम् कृत्वा)

हवन की वेदी से उत्तर दिशा में एक-एक हाथ के फासले से पांच वेदी बनावें, पहली पूर्व दिशा में, दूसरी पश्चिम दिशा में, तीसरी उत्तर दिशा में, चौथी दक्षिण दिशा में और पांचवीं उन चारों के बीच में बनावे। **(गोमयेनोपलिप्य)**

उन पांचों वेदियों पर गौ के गोबर से लीपे।

(तासामुपरि यवस्तंदुलश्चूर्णेन वाष्टदलं कृत्वा)

फिर उन पांचों वेदियों के ऊपर जौ के या चावल के चून से ऐसा अष्टकोण का आकार बनावे (फूल का)।

(तस्योपरि सप्तधान्यानि धृत्वा)

उन पाँचों वेदियों पर जरा सा सतनजा रक्खे।

(यजमान नवग्रह वेदिकामुपगच्छेत्)

कर्म करने वाला नवग्रह की वेदी के पास आकर आसन पर बैठे।

(पूर्वाभिमुखं कृत्वा) पूर्व दिशा को मुंह करके।

(स्वस्तिवाचनं कृत्वा)

पाधा यजमान के हाथ में चावल देकर नीचे लिखे मन्त्र पढ़े।

ओं मतिकरणं भयहरणं गिरिजाशरणं गणेश-

मभिवन्दे केदारेशनिवेशम् योशीशम् सर्व जगदीशम् ॥ हरिः ओं गणानान्त्वा गणपति छंं हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति छंं हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिछंं हवामहे व्वसोमम आहमजानिगर्ब्भधमात्वमजा सिगर्ब्भधम् ॥१॥ स्वस्ति न इन्द्रोव्वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्वदेवाः । स्वस्तिनस्तार्क्ष्योअरिष्ट नेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥२॥ पयः पृथिव्यां पयः औषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥३॥ विष्णोः रराटमसिव्विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसिव्विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्णवमसि व्विष्णवे त्वा ॥४॥ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्य्या देवता चन्द्रमा देवता व्वसवो देवता रुद्रा देवता आदित्या देवता मरुतो देवता विश्वदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता व्वरुणो देवता ॥५॥ ओं द्यौः

शान्तिरन्तरिक्ष ळ्ठं शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः
शान्तिरोषधयः शान्ति वनस्पतयः शान्ति-
र्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्वळ्ठं शान्तिः
शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥६॥
ओंएतन्त्तेदेवसवितर्यज्ञम्प्राहुर्बृहस्पतयेब्रह्मणे ।
तेन यज्ञमवतेन यज्ञपतिन्त्तेनमामव ॥७॥
ओं मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ-
मिमन्तन्नोत्वरिष्टंयज्ञळ्ठं समिमन्दधातु ।
विश्वेदेवा सइह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठः ॥
शुभ शान्तिर्भवतु ॥८॥

यजमान गणेश जी पर चावल छोड़े।

(अथ देवपूजन संकल्पम्)

यजमान जल, चावल लेकर देवताओं के पूजन का संकल्प करे।

ओं तत्सद्विष्णुर्विष्णुर्विष्णु अद्य नमः
परमात्मने श्रीपुराणपुरुषोत्तमायाद्य श्रीब्रह्म-
णोऽह्नि द्वितीय प्रहरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे
वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे
प्रथम चरणे जम्बू द्वीपे भरतखंडे आर्य्या-

वर्तान्तर्गते ब्रह्मावर्तैकदेशे पुण्यक्षेत्रे वेदोक्त-फलप्राप्तिकामसिद्धयर्थं वर्तमाननामसम्वत्सरे अमुकायने भास्करे अमुक गोले अमुकपक्षे ऽमुकतिथौऽमुकवासरे अमुकगोत्रोहं अमुक शर्म्मांहं गणपत्यादि षोडशमातृनाम्सर्वेषां देवानाम् आवाहनम् पूजनमहं करिष्ये ॥

जल चावल सीधा हाथ करके अंगुलियों पर को पृथ्वी पर छोड़ दे।

(गणेशावाहनम् अक्षतान् गृहीत्वा)

यजमान के हाथ में चावल दे गणेश जी का आह्वान करे और पाधा ये मन्त्र पढ़े।

ओं विनायकं महत्पुण्यं सर्वदेवनमस्कृतम् ।
सर्वविघ्नहरं गौरीपुत्रमावाहयाम्यहम् ॥

गणेश जी पर चावल छोड़ कर ये मन्त्र पढ़े।

भो गणपति दैवत । अत्रमंडलेइहागच्छ इह-तिष्ठ, ममयजमानस्य गृहे शुभम् कल्याणं कुरु । गणपतये नमः पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनम् स्नानं, वस्त्रम्, यज्ञोपवीतम्, गंधाक्षतान् पुष्पं, धूपम्, दीपम्, नैवेद्यं, ताम्बूलम्, पुंगी

फलम् दक्षिणाञ्च समर्पयामि नमो नमः ॥

पहले गणेश जी को स्नान करावे अर्थात् तीन आचमनी जल की भरके गणेशजी पर छोड़े या एक पात्र भरकर जल छोड़े फिर वस्त्र, यज्ञोपवीत, रोली के छींटे, चावल, फूल, धूप, दीप बाले, मीठा, पान, सुपारी, पैसा ये सब चीजें चढ़ावे फिर हाथ जोड़े, पाधा यह मन्त्र पढ़े।

ओं नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्चवो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्चवो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः ॥

(कलश आवाहनम्) घड़े का आवाहन करे। मन्त्र–

ओं वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भ सर्जनीस्थो वरुणस्यऋत सदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसिवरुणस्यऋतसदनमासीद्॥१॥

पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे, फिर हाथ जोड़े। मन्त्र–

गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्वदेसिन्धुकावेरीजलेस्मिन्सन्निधिंकुरु॥१॥
सरितः सागराः शैलास्तीर्थाणि जलानदाः।
आयान्तुयजमानस्यदुरितःक्षयकारिका॥२॥

प्रभासं पुष्करं चैव नैमिषं च हिमालयम् ।
वटेश्वरम् त्रिमुक्तञ्च गंगासागरसंगमम् ॥३॥
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्येमातृगणा स्मृताः ॥४॥
कुक्षौ तु सागरा सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽथाथर्वणः ॥५॥
अंगैश्चसहिताः सर्वे कलशन्तु समाश्रिता ॥

(ब्रह्मावाहनम्) ब्रह्मा का आह्वान करे । मन्त्र–

ब्रह्माणं शिरसानित्यं अष्टनेत्रं चतुर्मुखम् ।
गायत्रीसहितं देवं ब्रह्मं आवाहयाम्यहम् ॥१॥

पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे, हाथ जोड़े । मन्त्र–

ओं ब्रह्म यज्ञानंप्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः
सुरुचोवेनआवः । सुबुध्न्या उपमा अस्यविष्टाः
सतश्चयोनिमसतश्च विवः ॥२॥

(विष्णोरावाहनम्) विष्णु भगवान का आह्वान करे । मन्त्र–

केशवं पुण्डरीकाक्षं माधवं मधुसूदनम् ।
रुक्मिणीसहितं देवं विष्णुमावाहयाम्यहम् ॥३

पूजन कर सामग्री चढ़ावे। मन्त्र–

ओं इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम्
समूढ़मस्य पाथ्ठंसुरे ॥३॥

(शिवस्यावाहनम्) महादेव का आवाहन करे।

शिवं शंकर मीशानं द्वादशार्द्ध त्रिलोचनम् ।
उमया सहितं देवं शिवमावाहयाम्यहम् ॥४॥

पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे और हाथ जोड़े। मन्त्र–

ओं नमस्ते रुद्रमन्यव उतोतइषवे नमः ।
बाहुभ्यामुत ते नमः ॥४॥

(ओंकाराय नमः) पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे हाथ–

ओंकारं विन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ।
कामदं मोक्षदं चैव ओंकाराय नमो नमः ॥५॥

(लक्ष्मी आवाहनम्) लक्ष्मी का आवाहन करे। मन्त्र–

क्षीरसागरसंभूतां शरीरे विष्णुमाश्रिताम् ।
यजमानहितार्थाय लक्ष्मीमावाहयाम्यहम् ॥६॥

पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे हाथ जोड़े। मन्त्र–

ओं श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पाश्वे
नक्षत्राणिरूपमश्विनोव्यात्तम् ।इष्णन्निषाणा-

मुम्म इषाण सर्वलोकम्मऽइषाणा ॥६॥

(सूर्य्यावाहनम्) सूर्य का आवाहन करे। मन्त्र—

दिवाकरं सहस्रांशुं ब्रह्माद्यैश्च सुरैर्नुतम्।
लोकनाथंजगच्चक्षुसूर्य्यमावाहयाम्यहम्॥७॥

पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे हाथ जोड़े। मन्त्र—

ओं आकृष्णेन रजसावर्तमानो निवेशयन्न-मृतम्मर्त्यञ्च हिरण्येन सविता रथेना देवा यातिभुवनानि पश्यन् ॥७॥

(चन्द्रावाहनम्) चन्द्रमा का आवाहन करे। मन्त्र—

हिमरश्मिन्निशानाथं तारिकापतिमुत्तमम्।
औषधीनांच राजानंचन्द्रमावाहयाम्यहम्॥६॥

पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे हाथ जोड़े। मन्त्र—

ओं इमं देवा असपत्नꣳ सुवद्ध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्या-येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशएष वोऽमीराजाऽसोमोऽस्माकं ब्राह्मणा-नाꣳ राजा ॥८॥

(भौमावाहनम्) मंगल का आवाहन करे। मन्त्र—

धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्तेजः समप्रभं।
कुमारंशक्तिहस्तंच भौमामावाहयाम्यहम्॥६॥

पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे हाथ जोड़े। मन्त्र–

ओं अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपाꣳरेता ꣳसि जिन्वति ॥६॥

(बुधस्यावाहनम्) बुध का आवाहन करे। मन्त्र–

बुधं बुद्धिप्रदातारं सोमवंशविवर्धनम्।
यजमानहितार्थाय बुधमावाहयाम्यहम् ॥१०॥

पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे हाथ जोड़े। मन्त्र–

ओं उद्बुध्य स्वाग्ने प्रतिजागृहित्वामिष्टा पूर्तेसꣳसृजेथामयञ्च अस्मिन् संधस्थे अध्युत्त-रस्मिन् विश्वेदेवायजमानश्चसीदत ॥१०॥

(बृहस्पत्यावाहनम्) गुरु का आवाहन करे। मन्त्र–

गुरुं श्रेष्ठां गिरापुत्रं देवानां च पुरोहितम्।
शक्रस्यमंत्रिणंश्रेष्ठंगुरुमावाहयाम्यहम्॥११॥

पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे हाथ जोड़े। मन्त्र–

ओं बृहस्पते अति यदर्योऽअर्हाद्द्युमद्विभाति-क्रतुमज्जनेषु। यद्दीद्र्य च्छवस ऋत प्रजात

तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥११॥

(शुक्रस्यावाहनम्) शुक्र का आवाहन करे। मन्त्र—

प्रविश्य जठरे शम्भोर्निष्क्रान्तः पुनरेव यः।
आचार्यमसुरादीनां शुक्रमावाहयाम्यहम्॥१२॥

पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे हाथ जोड़े। मन्त्र—

ओं अन्नात्परिश्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ꣳ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रिय-मिदम्पयोऽमृतम्मधु ॥१२॥

(शनेरावाहनम) शनि का आवाहन करे। मन्त्र—

प्रदीप्त वह्नि वर्णाभं नीलाञ्जनसमप्रभम्।
छायामार्तण्डसंभूतम् शनिमावाहयाम्यहम्॥१३

रोली से छींटे लगाकर सब सामग्री चढ़ावे हाथ जोड़े। मन्त्र—

ओं शन्नोदेवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभिस्रवन्तु नः ॥१३॥

(राहोरावाहनम्) राहु का आवाहन करे। मन्त्र—

चक्रेणछिन्न मूर्द्धानं विष्णुना च निरीक्षितम्।
सैंहिकेयं महाकायं राहुमावाहयाम्यहम् ॥१४॥

पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे हाथ जोड़े। मन्त्र—

ओंकयानश्चित्र आभुव दूतीसदा वृधः सखा।

कया शचिष्ठयावृता ॥१४॥

(केतोरावाहनम्) केतु का आवाहन करे। मन्त्र–

ब्रह्मणः कुलसंभूतं विष्णुलोकेभयावहम् ।
शिखिनन्तु महाकायं केतुमावाहयाम्यहम् ॥१४

पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे हाथ जोड़े। मन्त्र–

ओं केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्य्या अपेशसे ।
समुषद्भिरजायथाः ॥१५॥

(शेषस्यावाहनम्) सर्प का आवाहन करे। मन्त्र–

भुजङ्ग मण्डलाधीशं धरणी धरण क्षमम् ।
पातालनायकं देवं शेषमावाहयाम्यहम् ॥१६॥

पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे हाथ जोड़े। मन्त्र–

ओं नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ।
येअन्तरिक्षेयेदिवितेभ्यःसर्पेभ्योनमः॥१६॥

(गौर्य्यादिषोडशमातृ पूजनम्)

पार्वती से लेकर १६ माताओं का पूजन कर सब सामग्री और कलावा चढ़ावे। मन्त्र–

ओं गौरी पद्मा शचीमेधा सावित्री विजया जया। देवसेना स्वधा स्वाहामातरो लोकमातरः ॥ हृष्टिः पुष्टिस्तथातुष्टि रात्मदेवी

त्वया सह । आदौ विनायकः पूज्यः अन्ते च कुलमातरः ॥

(ब्रह्मादीनां तिलकं कृत्वा) महा ब्राह्मण के तिलक करके हाथ जोड़े। मन्त्र–

ओं नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मण हिताय च ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥१॥

यजमान आचार्य के पौंहची बांधे। मन्त्र–

ओं व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥१

(आचार्योऽपि यजमान रक्षा बन्धनं कुर्यात्)

आचार्य कर्म कराने वाले के पौंहची बांधे।

ॐ येन बद्धोबली राजादानवेन्द्रो महाबलः ।
तेनाहं प्रतिबध्नामि रक्ष मा चल मा चल ॥१॥

(तिलकंकुर्य्यात्) फिर तिलक करे। मन्त्र–

आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः ।
तिलकन्ते प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थसिद्धये ॥२॥

(यजमानम् पवित्रीधारणं कृत्वा)

कर्म करने वाला दोनों हाथों में कुशा की पवित्री पहने दो कुशा की सीधे हाथ में, तीन कुशा की बाँये हाथ में कनकी अंगुली के धोरे की अंगुली में पहने और कुशा के चार टुकड़े लेकर एक चोटी में, एक पैर तले धरे। मन्त्र–

द्वौ दर्भौ दक्षिणे हस्ते सव्ये त्रीण्यासनेतथा ।
पादमूले शिखायान्तु सकृद्यज्ञोपवीतके ॥

(प्रतिज्ञा संकल्पम्)

जल चावल लेकर पंचक शान्ति करने का संकल्प करे।

(जलाक्षतं गृहीत्वा)

अद्येहेत्यादि मासानाम् मासोत्तमे मासेऽमुकमासेऽमुकपक्षेऽमुकतिथौऽमुकवासरे ऽमुकराशि स्थिते सूर्य्येऽमुकगोत्रस्य पितुरमुक प्रेतस्य पञ्चकजनितं दुर्मरणदोषोपशान्त्यर्थं सपरिवाराणां आयुरारोग्य सुख श्री प्राप्त्यर्थं पञ्चकविधानमहं करिष्ये ॥१॥

(पञ्च वेदिकायां भूमि स्पृष्ट्वा)

पाँचों वेदियों पर सीधा हाथ धरे।

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसिविश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथ्वीदृ ꣳ पृथिवीम्म पाहि ꣳ सी ॥

(पञ्च वेदिकां सप्तधान्य हस्तम् धृत्वा)

पांचों वेदियों के सतनजे पर हाथ लगावे। मन्त्र–

ॐ धान्यसि धिनुहिदेवान् प्राणायत्वा दानाय त्वा व्यानाय त्वा दीर्घामनुप्रसितिमायुषेधा-न्देवो वः सविता हिरण्यपाणिः। प्रतिगृभ्णा त्वच्छिदेण पाणिनाचक्षुषे त्वा महीनांप-थोसि ॥१॥

(तस्योपरि पूर्व वेदिकां हेमयं धनिष्ठा कलशंस्थापयेत्)

धनिष्ठा का कलश सोने का या मिट्टी का पूर्व दिशा की वेदी रख दे।

(हेमयं शतभिषा कलशं उत्तरे वेदि-कायां स्थापयेत्)

सोने का या मिट्टी का जो शतभिषा का कलश है उसको उत्तर दिशा की वेदी पर रख दे।

(हेमयं पूर्वा भाद्रपद कलशं पश्चिम दिशि वेदिकायां स्थापयेत्)

सोने का या मिट्टी का जो पूर्वा भाद्रपद का कलश है उसको पश्चिम दिशा की वेदी पै रख दे।

(हेमयं या मृण्मयं उत्तरा भाद्रपद कलशं दक्षिण दिशि वेदिकायाम् स्थापयेत्)

सोने या मिट्टी का जो कलश उत्तरा भाद्रपद का है दक्षिण दिशा की वेदी पै रख दे।

(हेमयं रेवत्या कलशं चतुर्वेदिकायां मध्येस्थापयेत्)

सोने या मिट्टी का जो कलश रेवती का है, उसको चारों वेदियों के बीच की वेदी के ऊपर रखे।

(मन्त्रं पठेत्) ये मन्त्र पढ़े।

ॐ आजिघ्रकलशं मह्या त्वा विशत्विन्दवः। पुनरुजी निवर्त्तस्व सानः सहस्र धुक्ष्वो-रुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः ॥१॥

(पंचक कलशे नमस्कारं कृत्वा)

पांचों कलशों को हाथ जोड़े। मन्त्र–

ॐ आवाहि तोहिदेवेशं सृष्टिस्थिति विनाश-नम्। त्रयाणामपि लोकानाम् पात्रं तुभ्यं नमो नमः ॥१॥

(पंच कुम्भान् जलं परिपूरयेत्)

पांचों कलशों में पानी या गंगाजल भरे। मन्त्र–

ॐ वरुणस्योत्तंभनमसि व्वरुणस्य स्कंभ सर्जनीस्थो व्वरुणस्यऽऋत सदन्यसि व्वरुण-स्यऽऋत सदन मसि वरुणस्य ऋत सदन-मासीद ॥

(पंच कलशे गन्धम्) पांचों कलशों में रोली गेरे मन्त्र–

ॐ त्वा गन्धर्वा अखनोस्त्वामिंद्रस्त्वा बृहस्पतिः त्वामोषधे सोमोराजा विद्वान्य-क्ष्माद मुच्यत।

(पंच कलशे सर्वौषधीः) पांचों कलशों में शतावर गेरे। मन्त्र—

ॐ या औषधीः पूर्वा जातादेवेभ्यस्त्रियुगंपुरा।
मनुनैवभ्रूणामहꣳ शतं धामानि सप्त च ॥

(पंचकलशे दूर्वा) पांचों कलशों में दूब के नाल गेरे। मन्त्र—

ॐ कांडात्काण्डात्प्ररोहन्तीपुरुषःपुरुषस्परि।
एवानोदूर्व्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥

(पंच कलशे पंच पल्लवान्)

पाँचों कलशों में पांच-पांच पत्ते बढ़, गूलर, पीपल, आम, पिलखन के गेरे। मन्त्र—

ॐ अश्वत्थे वोनिषदनंपर्णेवोव्वसतिष्कृता।
गोभाजइक्तितालासथ यत्सनवथ पुरुषम् ॥

(पंच कलशे सप्तवामृदः)✡

पाँचों कलशों में थोड़ी-थोड़ी सातों मिट्टी गेरे। मन्त्र—

✡**नोट**—हाथी के नीचे की, घोड़े के नीचे की, तालाब की, चौराहे की, बाम्बी की, नदी की, राजद्वार यानी कचहरी की।

ॐ स्योना पृथिवी नोभवानृक्षरानि वेशनी । यच्छानः शर्मसप्रथा ।

(पंचकलशे फलम्) पाँचों कलशों में सुपारी गेरे । मन्त्र—

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः । बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुंचत्वᳬं हसः ॥

(पंच कलशे पंचरत्नानि) पाँचों कलशों में सोना, चांदी, तांबा, मूंगा, मोती, पंचरत्न गेरे । मन्त्र—

ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् । दधद्रत्नानिदाशुषे ॥

(पंच कलशे हिरण्यम्) पांचों कलशों में सोने की या तांबे की दक्षिणा गेरे । मन्त्र—

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः परिरेक आसीत् । स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

(पंच कलशे श्वेतवस्त्रम्)

पांचों कलशों पर सफेद कपड़ा चढ़ावे । मन्त्र—

ॐ सुजातोज्योतिषसहशर्मवरूथमासदत्स्वः । व्वासोअग्नेविश्वरूपᳬं संव्ययस्व व्विभावसो॥

पांचों कलशों के कलावा बांधे और पाँचों कलशों पर एक-एक सराई धरे।

(पञ्चमूर्ति प्रतिज्ञासंकल्पं कृत्वा)

पांचों मूर्तियों के देने का संकल्प करे।

(जलाक्षतानि गृहीत्वा) जल चावल लेकर।

ओं अद्येहेत्यादि मासानाम् मासोत्तमे मासेऽमुकमासेऽमुकपक्षेऽमुकतिथौऽमुकवासरे अमुकराशि स्थिते सूर्य्ये अमुक गोत्रस्य पितुरमुक प्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्तिहेतवे पञ्चक-शान्तिधनिष्ठाशतभिषा पूर्वाभाद्रपद उत्तरा भाद्रपद रेवत्या पंचप्रतिमा पंचगव्य पंचामृत शुद्धोदक स्नानपूजनमहंकरिष्ये।

(पुनः धनिष्ठाप्रतिमां स्वर्णमयीं पल✡ प्रमा-णम् पंचगव्येन शोधयित्वा पंचामृतेन पृथक्-पृथक् पंचकण्डिकया स्नापयित्वा)

फिर धनिष्ठा की जो मूर्ति सोने की है उसको तांबे के पात्र में या सराई में धरकर पंचगव्य, पंचामृत, गंगाजल इनमें स्नान करावे। मन्त्र—

✡एक पल बराबर चार तोले।

ओं आपोहिष्ठामयो भुवस्तानऊर्जे दधातन । महेरणाय चक्षसे ॥ योवः शिवतमो रस-स्तस्य भाजयतेहनः उशती रिवमातरः ॥ तस्माअरग मामवो यस्य क्षयाय । जिन्वथ आपो जन यथा चनः ॥

(ततः धनिष्ठा मूर्तिं पूर्वदिशि कलशेतन्दु-लान्नोपरिस्थापयेत्)

उस धनिष्ठा की मूर्ति को पूर्व दिशा वाले कलश पर चावल रख उनके ऊपर रख दे।

(पुनः धनिष्ठा मूर्तिं गन्धाक्षत पुष्प माल्यो धूपं दीपं नैवेद्यं आचमनीय पुंगीफल ताम्बूलं यज्ञोपवीतम् दक्षिणा समर्पयित्वा)

फिर धनिष्ठा की मूर्ति पै रोली या चन्दन से पूजा कर चावल ान फूलों की माला सुपारी या नारियल जनेऊ मीठा चढ़ाकर ४ आचमनी जल छोड़े, धूप दे, घी का दीवा बाले।

(प्रार्थनाम् कुर्य्यात्) हाथ जोड़े और प्रार्थना करे।

ओं व्वसोः पवित्र मसिशतधारम् व्वसो पवित्रमसिसहस्र धारम् देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्त्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ।

(पुनः शतभिषा स्वर्ण प्रतिमापल प्रमाणं पूर्व विधि पञ्चगव्य पञ्चामृतेन शोधयित्वा उत्तरे कलशम् तन्दुलोपरिस्थापयित्वा)

फिर शतभिषा की जो सोने की मूर्ति है उसको पहली विधि से पंचगव्य पंचामृत में स्नान कराकर उत्तर दिशा में कलशे पर चावल रख उसके ऊपर रख दे।

(गंधादि पूजनम् कृत्वा)

रोली से पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे चार आचमनी जल छोड़े और एक घी का दीपक बाले।

(प्रार्थनाम् कुर्य्यात्) हाथ जोड़े। मन्त्र–

ॐ वरुणस्योत्तभमन मसिव्वरुणस्यऽऋत सदन्नयसि व्वरुणस्य ऽऋत सदन मासीद॥ २

(पुनः पूर्वा भाद्रपदे स्वर्ण प्रतिमां पल प्रमाणं पूर्वविधि पञ्चगव्य पञ्चामृतेन शोधयित्वा पश्चिम कलशे तन्दुलोपरि स्थापयित्वा)

फिर पूर्वा भाद्रपद की जो मूर्ति सोने की है उसको पहली विधि से पंचगव्य पंचामृत में स्नान कराकर पश्चिम दिशा वाले कलश पर चावल रखकर उसके ऊपर रख दे।

(गंधादि पूजनम् कृत्वा)

रोली से पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे चार आचमनी जल छोड़े और एक घी का दीपक बाले।

(प्रार्थनाम् कुर्य्यात्) हाथ जोड़े। मन्त्र–

ॐ उतनोहिर्बुध्न्यः शृणोत्वजएकपात् पृथिवी समुद्रः। विश्वेदेवा ऽऋता वृधोहु-वानास्तुता मन्त्राः कविशस्तावन्तु ॥३॥

(पुनः उत्तरा भाद्रपदे स्वर्णप्रतिमा पल प्रमाणं पूर्व विधि पंचगव्य पंचामृतेन शोधयित्वा दक्षिण कलशे। तन्दुलोपरि स्थापयित्वा)

फिर उत्तरा भाद्रपद की जो सोने की मूर्ति है पहली विधि से पंचगव्य पंचामृत में स्नान कराकर दक्षिण दिशा के कलश पर चावल रखकर उसके ऊपर रख दे।

(गंधादि पूजनं कृत्वा सर्वसामग्री धृत्वा)

रोली या चावल से पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे चा आचमनी जल की छोड़े एक घी का दीवा बाले।

(प्रार्थनाम् कुर्य्यात्) हाथ जोड़े। मन्त्र–

ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तेपिता नमस्ते अस्तुमामाहिꣳसीः। निवर्तयाम्यायुषेन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वायसुवी-र्य्याय ॥४॥

(पुनः रेवत्या स्वर्णप्रतिमां पल प्रमाणं पूर्वविधि

पञ्चगव्य पञ्चामृतेन शोधयित्वा चतुर्थ कलशमध्येकलशे तन्दुलोपरिस्थापयित्वा)

फिर रेवती की जो सोने क़ी मूर्ति है उसको पहली विधि से पंचगव्य पंचामृत में स्नान कराकर चारों कलश के बीच में कलश पर चावल रख उनके ऊपर रख दे।

(गंधादिपूजनम् कृत्वा सर्वसामग्री धृत्वा)

रोली या चन्दन से पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे चार आचमनी जल की छोड़े एक घी का दीवा बाले।

(प्रार्थनाम्) हाथ जोड़े। मन्त्र—

ओं पूषन्तवव्व्रते व्वयन्नरिष्येमकदाचन। स्तोतारस्तऽइहस्मसि ॥५॥

(ततः पंचकलश समीपेषडंग पठेत्)

अब पांचों कलशों के धोरे रुद्री या दंडक का पाठ करे या करावे।

(पुनः ईशान कोणे रक्त वस्त्रोपरि तन्दुलां चतुर्द्दस्यांयमस्थापनम्)

फिर ईशान दिशा में लाल कपड़े पर चौदह यमों का स्थापन करे अर्थात् निम्न मन्त्रों के बराबर २ चावल रखता जावे। मन्त्र—

ओं यमम् स्थापयामि १। ओं धर्मराजं स्थापयामि २। ओं मृत्युञ्जयंस्थापयामि३। ओं अन्तकं स्थापयामि ४। ओं वैवस्वतं

स्थापयामि ५ । ओं कालं स्थापयामि ६ । ओं सर्वभूतक्षयं स्थापयामि ७ । ओं उदवरं स्थापयामि ८ । ओं दघ्नम् स्थापयामि ९ । ओं नीलं स्थापयामि १० । ओं परमेष्ठिनं स्थापयामि ११ । ओं वृकोदरं स्थापयामि १२ । ओं चित्रंस्थापयामि १३ । ओं चित्रगुप्तं स्थापयामि १४ ।

(तस्यवस्त्रोपनम्) उसी कपड़े पर ईशान कोण में अघोर मृत्युञ्जय का स्थापन करे। मन्त्र–

ओं अघोरेभ्यो य घोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्यः सर्वतः सर्व सर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्र रूपेभ्यो रुद्र रूपाय नमः ॥१॥ अघोरमृत्युञ्जयं स्थापयामि ।

(ततः वैस्वादि अघोरां तरं पूजनम् कृत्वा)

चौदह यमों का और अघोर मृत्युञ्जय का रोली से पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे और १५ दीवे बाले।

(ततो चतुर्थ ताम्बूलोपरि गन्धं पुष्पं नैवेद्य अक्षतानि वस्त्रम् फलम् दक्षिणां सजलम् चतुर्थब्राह्मण वरण संकल्पम् कुर्य्यात्)

चार पानों पर रोली, फूल, मीठा, चावल, अंगोछे, सुपारी, पैसे, जल लेकर चार ब्राह्मणों के वरण का संकल्प करे। मन्त्र–

ओं अद्येहेत्यादि अमुक गोत्रस्य पितुरमुक प्रेतस्य पंचक शान्ति निमित्तक प्रेतत्व विमुक्ति हेतवे एभिर्गंधाक्षत पुष्प चन्दन ताम्बूल वासोभिः दक्षिणाऽमुकगोत्रस्य अमुक शर्म्माणं ब्राह्मणंब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे।

पान पर जो कलावा धरा है उससे चारों ब्राह्मणों के पौंहची बांधे। मन्त्र–

ओंव्रतेनदीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणां।
दक्षिणाश्रद्धामाप्नोतिश्रद्धयासत्यमाप्यते।।१।।

(तिलक) फिर चारों ब्राह्मणों के तिलक करे। मन्त्र–

ओं नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मण हिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः।।

(पुनः आचार्यवरण)

फिर इसी प्रकार पान पर सब चीजें धरकर पाधा का वरण करे। मन्त्र–

ओं अद्येहेत्यादि अमुकगोत्रस्यपितुरमुक प्रेतस्य पंचक शान्ति निमित्तक प्रेतत्व-विमुक्तिहेतवे एभिर्गंधाक्षत पुष्प चन्दन

ताम्बूल वासोभिः दक्षिणाऽमुक गोत्रस्य अमुकशर्म्माणं ब्राह्मणं आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे। पौंहची बांधे। व्रतेन दीक्षाप्नोति०।

तिलक करे। ओं नमो ब्रह्मण्य देवाय०।

अथ कुशकण्डिका करणं

अब कुशकण्डिका करावे

(ब्रह्मवरणसंकल्पम्) एक पान पर रोली चावल कलावा सब चीजें धर कर ब्रह्मा के वरण का संकल्प करे। मन्त्र—

ओं अद्येहेत्यादि अमुक गोत्रस्य अमुक शर्म्माहंपञ्चकशान्तिहवनकर्मणिसांगताफल सिद्धयर्थं श्रीयज्ञ पुरुष नारायण प्राप्त्यर्थं एभिर्गंधाक्षत पुष्प चन्दन ताम्बूल वासोभिः अमुकगोत्रं अमुकशर्म्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे।

जिसको ब्रह्मा बनावे उसके पौंहची बांधे। मन्त्र—

ओं व्रतेनदीक्षामाप्नोति०। तिलक करे। मन्त्र—

ओं नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मण०।

(व्रतोऽस्मीति प्रति वचनम्) पाधा जमान से ऐसा कहे।

(यथाविहितं कर्मकुरु)

जैसा शास्त्र में लिखा है वैसा कर्म कराओ।

(ॐ करवाणीति ब्राह्मणो वदेत्)

पाधा ऐसा कहे कि जिस प्रकार शास्त्र में लिखा है वैसा कर्म कराऊंगा।

(ततोऽग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्वा)

अग्नि से दक्षिण में ब्रह्मा के आसन के लिये एक पत्ता धरे।

(तदुपरि प्रागग्रान् कुशानास्तीर्य)

उस पत्ते के ऊपर पूर्व को अगला भाग यानी फुलंगन कर कुशा फैलावे।

(ब्राह्मणमग्नि प्रदक्षिण क्रमेणानीया ऽत्रत्वंमे ब्रह्मा भवेत्यभिधाय)

कुशाओं का ब्रह्मा बनावे उस ब्रह्मा को अग्नि की परिक्रमा यानी अग्नि के चारों ओर घुमा कर उस कुशा के ऊपर उत्तर को मुंह करके।

(कल्पितासने उपवेशयेत्)

उस बनाये हुए आसन पर रख दें।

(ततः प्रणीता पात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा-ऽऽपरिपूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्य)

एक सकोरे में जल भरे उसे कुशाओं से ढके और वह सकोरा ब्रह्मा को दिखावे—

(हवन वेदिकाम् आवाहनम्)

फिर चावल लेकर दोनों हाथ पधारे। मन्त्र–

विष्णुनालकरूपेण जगतां पतिना धृताम्।
क्षमायुक्तां धरणीं च पृथ्वीमावाहयाम्यहम् ॥

(वेदिका पूजनम्)

हवन की वेदी का पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे।

ओं स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः० ।

(स्रुव पूजनम्) स्रुवे का पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे।

ओं ब्रह्म यज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरोचोवेन आवः सबुध्न्या उपमा अस्यविष्टाः सतश्चयोनिमसतश्चव्विवः ।

(पुनः वेदीसंस्कारम् कृत्वा)

फिर हवन की जगह इस रीति से काम करे–

(ततो वेदिकायां तुषकेशशर्कराभस्मादिरहितां)

वेदी पर देख ले कि तृण या कोई अशुद्ध वस्तु तो नहीं है।

(हस्तमात्र परिमिताम् चतुरस्त्र भूमिंकुशैः परिसमूह्य)

वेदी पर कुशा से तीन बार जल का छींटा लगावे।

(तान्कुशान् ईशान्यां दिशि त्यजेत्)

फिर उस कुशा को ईशान दिशा की ओर रख दे।

(गोमयोदकेनोपलिप्य) गौ के गोबर से लीपे।

(स्रुवमूलेन प्रादेशमात्रमुत्तरोत्तरक्रमेणत्रिरुल्लिख्य)

स्रुवे की जड़ से वेदी पर तीन लकीर खैंचे-पश्चिम से पूर्व को।

(उल्लेखनक्रमेणानामिकाङ्गुष्ठाभ्यांमृदमुद्धृत्य)

कनकी अंगुली के धोरे की अंगुली और अंगूठे से वेदी की मिट्टी उठाकर तीन बार ऊपर को उछाले।

(जलेनाभ्युक्ष्य) जल का छींटा लगावे।

(नूतन कांस्य पात्रे अग्निमानीय स्थापनं कुर्य्यात्)

काँसी के पात्र में या सकोरे में अग्नि मंगाकर अपने अगाड़ी रक्खे और उसको एक पात्र से ढककर उसका आवाहन करे। मन्त्र–

मुखं समस्तदेवानां खांडवोद्यानदाहकम्।
पूजितं सर्वयज्ञेषु अग्निमावाहयाम्यहम् ॥

पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे। ओं जयन्ती मङ्गला

ओं जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गाक्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते ॥

(अग्नि स्थापन कुर्यात्समाधाय)

वेदी के ऊपर लकड़ी धर कर अग्नि को रख दे।

(अग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात्)

अग्नि से उत्तर की तरफ कुशा के ऊपर वह सकोरा धरे।

(ततः परिस्तरणम्) कुशा फैलाने के लिये तैयार होवे।

(बर्हिषश्चतुर्थ भागमादाय)

१६ कुशा लेकर वेदी के चारों तरफ इस प्रकार धरे।

(आग्नेयादीशानान्तम्)

अग्नि से ईशान दिशा तक चार कुशा धरे।

(ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तम्)

ब्रह्मा से अग्नि तक चार कुशा धरे।

(नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तम्)

नैऋत्य से वायव्य दिशा तक चार कुशा धरे।

(अग्नितः प्रणीता पर्यन्तम्)

अग्नि से प्रणीता पात्र तक चार कुशा धरे।

(ततोऽग्नेरुत्तरतः) अग्नि से उत्तर दिशा तक चार कुशा धरे।

(पश्चिम दिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयम्)

पवित्र छेदन के लिये पश्चिम में तीन कुशा धरे।

(कुशत्रय पवित्र करणार्थं साग्रमनन्तर्गर्भं कुशत्रय द्वयम्)

पवित्री बनाने के लिए ती[illegible] कुशा के बीच की कुशा निकाल कर दो पात्रों को वेदी से उत्तर मे[illegible]।

(प्रोक्षणी पात्रम्)

जल भर कर एक सकोरा प्रोक्षणी पात्र के लिए उत्तर में धरे।

(आज्यस्थाली) उत्तर में घी का पात्र धरे।

(सम्मार्जनार्थं कुशत्रयम्)

मार्जन यानी यजमान के ऊपर जल का छींटा देने के लिये उत्तर में तीन कुशा धरे।

(उपयमनार्थं वेणी रूप कुश त्रयम् प्रादेश मात्र समिधस्तिस्रः)

तीन कुशा बट के और तीन लकड़ी हाथ के बराबर उत्तर में धरे।

(स्रुवः आज्यम्)

उत्तर में घी के धोरे स्रुवा धरे पूर्व मुख।

(षट् पञ्चशदुत्तरवरमुष्टि शतद्वयावच्छि-न्नतन्डुलपूर्णपात्रम्)

एक लोटे या हंडले में दो सौ छप्पन मुट्ठी चावल भरके या कलशे में जिसको पूर्ण पात्र कहते हैं उत्तर में धरे।

(पवित्रच्छेदन कुशानां पूर्वपूर्व दिशि क्रमेणासादनीयम्)

पवित्र छेदन कुशा पश्चिम में पूर्व दिशा की ओर रख दे।

(अथ तस्यामेव दिशि असाधारण वस्तुन्युप-कल्पनीयानि)

पश्चिम से उत्तर की तरफ तीन ढाक की लकड़ी धरे।

(अन्यदपियुक्तमालेपनादि द्रव्यम्)

और घी चन्दन आदि चीजें उत्तर में रख दे।

(ततः पवित्र च्छेदन कुशैः पवित्रे छित्वा)

तीन कुशाओं से पवित्री छेदन कर उनकी पवित्री बनावे।

(ततः सपवित्रीकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणी पात्रे निधाय)

पाधा पवित्री पहन कर प्रणीता का जल तीन बार प्रोक्षणी पात्र में डाले।

(अनामिकांगुष्ठाभ्यां उत्तराग्रे पवित्रे गृहीत्वा)

अनामिका अंगुली और अंगूठे से पवित्रा थामे।

(त्रिरुत्पवनम्)

प्रोक्षणी पात्र से तीन बार जल का ऊपर को छींटा दे।

(ततः प्रोक्षणी पात्रस्य सव्य हस्त करणं)

प्रोक्षणी पात्र को सीधे हाथ से उठाकर बायें हाथ में धर ले।

(अनामिकागुष्ठाभ्यां पवित्रे गृहीत्वा)

अनामिका अंगुली और अंगूठे से पवित्रा थामे।

(त्रिरुद्गिंगनम्) प्रणीता के जल को तीन बार ऊपर को उछाले।

(प्रणीतोदकेन प्रोक्षणी प्रोक्षणम्)

प्रणीता का जो जल है उसको प्रोक्षणी पात्र में तीन बार थोड़ा-थोड़ा सा गेरे।

(ततः प्रोक्षणी जलेन यथासादित वस्तु सेचनम्)

प्रोक्षणी पात्र के जल का सब जगह छींटा लगावे।

(ततोऽग्निप्रणीतयोर्मध्येप्रोक्षणीपात्रनिधानम्)

अग्नि और प्रणीता के बीच में प्रोक्षणी पात्र रख दे।

(आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः)

घी के कटोरे में देख ले कि घी में कुछ अपवित्र वस्तु तो नहीं पड़ी है।

(ततोऽधिश्रयणम्) घी के कटोरे को अग्नि पर रख दे।

(ततोज्वल तृणादिना हविर्वेष्टयित्वा प्रदक्षिणक्रमेण वह्नौ तत्प्रक्षेपः)

एक कुशा को जलाकर घी के कटोरे के चारों तरफ फिरा कर अग्नि में डाल दे।

(पर्यग्निकरणम्) अब अग्नि को चेतन कर दे।

(ततः स्रुव प्रतपनम्कृत्वा) स्रुवे को अग्नि में सेक ले।

(संमार्जन कुशानामग्रैरन्तरतो मूलैर्वाह्यतः)

संमार्जन कुशाओं को उठाकर, स्रुवेके आदि, मध्य और अन्त में लगावे।

(स्रुवं संमार्जन प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य)

प्रणीता के जल का स्रुवे पर छींटा लगावे, उन्हीं कुशाओं से

(पुनः प्रतप्य स्रुवं दक्षिणतोनिदध्यात्)

स्रुवे को फिर अग्नि पर तपाकर दक्षिण में धरे कुशा के ऊपर।

(आज्यस्याग्नेरवतारणम्)

घी के कटोरे को अग्नि से उतार ले।

(ततः आज्ये प्रोक्षणी वदुत्पवनम्)

घी को तीन बार फिर ऊपर को उछाले।

(ततः उपयमन कुशान् वामहस्तेनादाय)

उपयमन जो कुशा हैं उन्हें बायें हाथ में उठा ले।

(उत्तिष्ठन् प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा)

ब्रह्मा उठ करके प्रजापति भगवान् का ध्यान करे।

(तूष्णीं घृत्ताक्ताः समिधस्तिस्रः क्षिपेत्)

पाधा बिना बोले ढाक की तीन लकड़ी घी में भिगोकर अग्नि में गेर दे।

(ततः उपविश्य सपवित्रः)

कर्मकर्त्ता पवित्रा लेकर बैठ जावे।

(प्रोक्षण्युदकेन प्रदक्षिणक्रमेणाऽग्नि पर्युक्षणं कृत्वा)

पवित्रे से प्रोक्षणी के जल का छींटा लगावे वेदी के चारों तरफ

(पवित्रे प्रणीतापात्रे निधाय)

प्रणीता पात्र में पवित्रा धरे।

(पतित दक्षिण जानुः) दाहिना घोंटा झुका ले।

(कुशेन ब्रह्मणान्वारब्धः)

कुशा को घोंटे से ब्रह्मा तक छुवा ले।

(समिद्धतमेऽग्नौ स्रुवेणाज्याहुतिं जुहोति)

अग्नि में लकड़ी लगाकर स्रुवे से घी की आहुति दे।

(तत्राधारादारभ्य द्वादशाहुतिषु तत्तदा-हुत्यनन्तरम्)

आधार नाम की आहुतियों से लेकर १२ आहुतियों को छोड़कर।

(स्रुवावस्थितहुतशेष घृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेप)

आहुति से बचा हुआ स्रुवे का घृत प्रोक्षणी पात्र में भी डालता जावे।

ओं प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये।

(इतिमनसा) ये आहुति मन से देवे।

ओं इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय।

(इत्याधारौ) यह आधार नाम आहुति है।

ओं अग्नये स्वाहा इदमग्नये।

ओं सोमाय स्वाहा इदं सोमाय॥

(इत्याज्यभागौ) ये दो आहुति आज्यभाग नाम से हैं।

ॐ भूः स्वाहा इदं भूः। ओं भुवः स्वाहा इदं भुवः। ओं स्वः स्वाहा इदं स्वः॥

(एता महाव्याहृतयः)

ये तीन महाव्याहृति नाम आहुति हैं।

ओं त्वन्नो अग्ने वरुणस्यविद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः

शोशुचानो विश्वाद्वेषाᳬसि प्रमुमुग्ध्स्मत् स्वाहा इदमग्निवरुणाभ्याम् । ओं स त्वन्नो अग्ने वमो भवोती नेदिष्टो अस्या उषसो व्युष्टौ । अवयक्ष्व नोवरुणᳬ रराणोव्वीहि मृडीकᳬ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीव-रुणाभ्याम् । ओं अयाश्चाग्नेस्य नभिशस्ति-याश्चसत्वमित्व मयाअसि अयानो यज्ञं व्वहास्ययानो धेहिभेषजᳬ स्वाहा इदमग्नये । ओं ये ते शतं व्वरुणयेसहस्रम् य्यज्ञियाः पाशावितता महान्तः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तुमरुतः स्वर्क्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च । ओं उदुत्तमं व्वरुण पाशमस्मदवाधमं व्विमध्यम ᳬ श्रथाय । अथावयमादित्य व्रते तवा नागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय ।

(एताः सर्व प्रायश्चित्त संज्ञका)

इनका नाम सर्व प्रायश्चित आहुति है।

ओंप्रजापतयेस्वाहाइदंप्रजापतये ।ओंअग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते।

अथ पञ्चमन्त्र आहुति दद्यात्

अब पांचों नक्षत्रों के मन्त्र से आहुति दे। मन्त्र-

ओं व्वसोः पवित्रमसिशतधारं व्वसो पवित्रमसि सहस्रधारं देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वाकामधुक्षः स्वाहा इदं वसवे ॥१॥ ओं वरुणस्योत्तम्भनमसिव्वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्यऽऋतसदनमसिव्वरुणस्य ऽऋतसदनमासीद स्वाहा इदं वरुणाय ॥२॥ ओं उतनोहिर्बुध्न्यः शृणोत्वजएकपात्पृथिवी समुद्रः। विश्वे देवाऽऋता वृधो हुवानास्तुता मन्त्राः कविशस्ताऽवन्तु स्वाहा इदं अजैकपादाय ॥३॥ ओं शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मा हिंᳬसी। निवर्तयाम्या युषेन्नाद्याय प्प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्प्रजास्त्वाय

सुवीर्य्याय स्वाहा इदं अहिर्बुध्न्याय ॥४॥
ओं पूषन्तव व्रतेव्वयन्न रिष्येम कदाचन।
स्तोतारस्त्तऽइहस्मसिस्वाहाइदंपूषणाय॥५॥

पुनः चतुर्दश्यां यमं आहुतिं दद्यात्

फिर चौदह यमों की आहुति दे।

ओं यमाय स्वाहा इदं यमाय।
ओं धर्मराजाय स्वाहा इदं धर्मराजाय।
ओं मृत्यवे स्वाहा इदं मृत्यवे।
ओं अन्तकाय स्वाहा इदं अन्तकाय।
ओं वैवस्वताय स्वाहा इदं वैवस्वताय।
ओं कालाय स्वाहा इदं कालाय।
ओं सर्वभूतक्षयाय स्वाहा इदं सर्वभूतक्षयाय।
ओं उदम्बराय स्वाहा इदं उदम्बराय।
ओं दध्न्याय स्वाहा इदं दध्न्याय।
ओं नीलाय स्वाहा इदं नीलाय।
ओं परमेष्ठिने स्वाहा इदं परमेष्ठिने।
ओं वृकोदराय स्वाहा इदं वृकोदराय।
ओं चित्राय स्वाहा इदं चित्राय।

ओं चित्रगुप्ताय स्वाहा इदं चित्रगुप्ताय।

अघोर मृत्युञ्जय की आहुति देवे। मन्त्र—

ओं अघोरेभ्योऽथघोरेभ्योघोरघोर तरेभ्यः। सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो नमस्तेऽअस्तुरुद्र रूपेभ्यो रुद्ररूपाय नमः॥ (नवग्रह आहुति दद्यात्)

नवग्रहों की भी आहुति दे।

(अथचरुहोमः) अब चरु की एक सौ आठ आहुति दे। मन्त्र—

ओं नमो नारायणाय स्वाहा।

(पञ्चक मन्त्रेण गायत्रीं जपित्वा)

गायत्री का जाप जो किया है उसकी और पांचों मन्त्र जो जपे हैं उनकी आहुति दिलवावे हवन के दशाँश का तर्पण और तर्पण के दशांश का मार्जन करे, एक बर्तन में जल भरकर उसमें दूध, दही, गंगाजल गेरे फिर फूल, दूर्वा या कुशा लेकर आहुति देने वाले अपने सीधे हाथ में जल भर कर अंगूठे के नीचे को उसी पात्र में छोड़ते जायें इसके नाम तर्पण है और उसी जल से अग्नि में छींटा लगाने को मार्जन कहते हैं।

(पुनः प्रथम पूर्वकलशे स्पर्शयामि)

अब पूरब के पहले कलशे पै सीधा हाथ पट्ट करके धरे। मन्त्र—

ओं कृणुष्ष्वपाज प्प्रसितिन्नपृथ्वींष्षाहि राजेवामवां इमेन। तूष्र्णीमनु त्प्रसिश्वति-

न्द्रणानो स्तासि विद्धयरक्षअस्तपिष्ठैः ॥१॥
तवभ्रमास आशुया पतन्त्य नुस्पृश धृषताशो
शुचानः। तपूᳬं ष्य्यग्ग्ने जुव्हापतङ्गान
सन्दितो व्विसृज व्विष्ष्वगुल्क्का: ॥२॥
प्रतिस्प्यशो व्वसृज तूर्णितमोभवाः पायुर्व्वि-
शोऽ अस्याऽअदब्धः योनोदूरेऽअघशᳬंसोयोऽ
अन्त्यग्ग्ने माकिष्टेव्व थिराद धर्षीत् ॥४॥
उयग्ग्नेतिष्ठप्प्रत्यातनुष्ष्वन्य मित्त्राँ
ऽओषतात्तिग्ग्महेते। योनोऽअरातिᳬं
समिधानचक्क्रेनीचातन्धक्ष्यतसन्नशुष्क्कम् ॥४
उर्द्धोभवप्प्रति व्यिध्द्याध्द्य स्म्मदा व्विष्कृ-
णुष्ष्णवदैव्व्या न्न्यग्ग्ने। अवस्त्थिरातनुहिषा-
तुन जूनाञ्जा मिम जामिम्प्रमृणीह शत्रून्
अग्ग्नेष्ट तेजसा सादयामि ॥५॥
(पुनः द्वितीय उत्तरे कलशे स्पर्शयामि)

फिर उत्तर दिशा के दूसरे कलशे पै हाथ धरे। मन्त्र—

ओं विभ्राड्बृहत्पिवतुसो म्म्यम्मदायु र्द्दध-

द्यज्ञापतावव्विहुरुतम् व्वात जूतोयोऽअभिर-
क्षतित्वम्मनाम्प्रजाः पुपोष पुरुधा व्विरा
जाति ॥१॥ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति
केतवः दृशेविश्वाय सूर्यम् ॥२॥ येना पावक
चक्षसाभुरण्यन्तञ्जनां ऽअनुत्वं वरुण
पश्यसि ॥३॥ देव्यावद्धय्यू ऽआगतꣳ रथेन
सूर्यत्व चामद्ध्वातज्ञꣳ समञ्जाथे तम्प्रत्कन-
थायं वेनश्चित्रन्देवानाम् ॥४॥ तम्प्रवनथा
पूर्वथा विश्व थेमथा ज्येष्ठता तिम्बर्हिषदꣳ
स्वर्विदम प्रतीचीनं वृजनन्दोहसे धुनिमाशु-
ञ्जयन्त मनुयासुव व्वर्द्धसे ॥५॥ अयम्बे
नश्चो दयत्पृश्निन्न गर्ब्भा ज्ज्योति र्ज्जरायू
रजसो ब्बिमाने इममपाꣳ सङ्गमे सूर्यस्य
शिशुवि प्रामतिभी रिहन्ति ॥६॥ चित्रं
देवानां मुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुण-
स्याग्ने आप्प्रा द्यावा पृथिवीऽअन्तरिक्षꣳ
सूर्यऽआत्मा जगतस्तस्त्थुषश्च ॥७॥ आन

ऽइडाभिर्विदथेषु शस्तिविश्वानरः सर्विंतादेव ऽएतु अपियथा जृवानोमत्सथानो विश्वञ्ज-गदभि पित्वेमा नीषा ॥८॥ यदद्य कच्चवृत्र हन्नुंदगाऽअभि सूर्य सर्वन्त दिन्द्रते वशे ॥९॥ तरणिर्विश्व दर्शतोज्योतिष्कृदसि सूर्यविश्व-माभा शिरोचनम् ॥१०॥ तत्सूर्यस्यदेव त्वन्तन्महि त्वम्मद्ध्या कर्तोवितत्थंसञ्जभार यदेदयुक्त हरितः सध स्थादाद्द्रात्त्रीवा सस्तनुते सिमस्मै ॥११॥ तन्मित्रस्य वरुण-स्याऽभिचक्षेसूर्योरूपंकृणुते द्योरूपस्थे अनन्त-मन्यद्द्रशदस्युपांजः कृष्णमन्यद्धरितः सम्भ-रन्ति ॥१२॥ वण्महां ऽअसि सूर्यव आदित्य महाऽअसि महस्ते सतो महिमा पनस्यतेद्धा देव महां ऽअसि ॥१४॥ वद् सूर्य श्रबुसामहां ऽअसि सत्रादेव महांऽअसि मान्हादेवा नाम सूर्यः पुरोहितोव्विभुज्जोतिरदाभ्यम् ॥१४॥ श्रायन्तऽइवसूर्य विश्वेदिन्द्रिस्य भक्षत वसूनि

जातेजनमान ऽओजसाप्प्रतिभागन्न दीधिम ॥१५॥ अद्यादेवाऽउदिता सूर्यस्यनिर ꣳ हसः पिपृतानिरवद्यात् तन्नोमित्र वरुणोमामहन्त्तामदितिः सिन्धुः पृथिवीऽउत द्यौः ॥१६॥ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्न मृतम्मर्त्यञ्च हिरण्येन सविता-रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥१७॥

(पुनः पश्चिमदिशि तृतीये कलशे स्पर्शयामि)

फिर पश्चिम के कलशे पर हाथ धरे।

ओं आशुः शिशानो वृषभो नभी मोघना घनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् संक्रन्दनो निमिष ऽएकवीरः शतꣳसेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः॥१ सङ्क्रन्दने निमिषेण जिष्णुनायुत्कारेणदुश्च्य-वनेन धृष्णुना तदिन्द्रेणजयततत्सहद्धंयुधोनर ऽइषुहस्तेन कृष्ण ॥२॥ सऽइहस्तैः सनिष-ङ्गिभिर्व्वशी सꣳ स्रष्टासयुध ऽइन्द्रोगणेन सꣳ सृष्टजित्सोमया वाहुशर्द्ध युग्नधन्न्वा

प्रतिहिताभिरस्ता ॥३॥ बृहस्ते परिदीयारथे
नरक्षोहा मित्रां ऽअपवा धमानः प्रमञ्जन्त-
सेनाः प्रमृणोयुधा जयन्नस्माकमेद्ध्य
वितारथानाम् ॥४॥ वलविज्ञा यस्थविरः
प्रवीरः सहस्वान्बीजी सहमान ऽउग्र ऽअभि
वीरो ऽअभिसत्वासहोजाजैत्रमिंद्र रथतिष्ट-
गोवित् ॥५॥ गोत्रभिर्दगोविदं वज्रवाहुवा-
ञ्जयं तमज्म्मप्रमृणांतमोजसा इमꣳ सजा-
ताऽअनुवीरयद्ध्वमिंद्रꣳ सखायोऽअनु सꣳ
स्भद्ध्वम् ॥६॥ अभिगोत्राणि सहसा
गाहमानोदयोव्वीरः शतमंयुरिंद्रः दुश्च्यावनः
पृतनाषाड युद्धयोस्माꣳ सेना अवत्सु
प्प्रयुत्सु ॥७॥ इन्द्रऽआसान्येता बृहस्पतिर्द-
क्षिणायज्ञः पुर ऽएतु सोमः देवसेनानामभि-
भञ्जतीनाञ्जयंतीनाम्रूप तोयन्त्वग्ग्रम् ॥८॥
इन्द्रस्य वृणोवरुणस्यराज्ञ ऽआदित्याः नाम्म-
रुताꣳ शर्दध्व ऽउरग्रम् महा मनसाम्भुव-
नच्च्य वानाङ् घोषो देवानाञ्जय तामुद-

स्थाश्च ॥६॥ उद्धर्ष यमघवन्नायुधान्युत्सत्व नाम्माम का नाम्मनाꣳ सि उद्वृत्र हन्त्वा जिनां वाजिन न्युद्रथा नाञ्जयन्ताञ्जयन्तु घोषाः ॥१०॥ अस्मामिंद्रः समृतेयुद्दध्वजेष्व-वस्माकंय्या ऽइषवत्स्ता जयंतु अस्माकं वीरा ऽउतरेभवन्त्वस्मां ऽउदेवा ऽअवता हवेषु ॥११॥ अमीषाञ्चित्तम्प्रति लोभयंती गृहाणाङ्गान्-य्ग्ध्वेपरेहि अभिप्प्रेहिनिर्द्दहहृत्सुशोकैरन्धे नामि त्रास्तमसासचंताम् ॥१२॥ अवसृष्टा परापतश रव्येब्ब्रह्मꣳ शितेगच्छामित्रान्प्र-षद्यस्व मामीषाङ् कञ्चनोक्षिषः ॥१३॥ प्रेता-जयतानरऽइन्द्रो वः शर्म्मयच्छतु उग्ग्रावः संतुवाह बोनाधृष्यायथासथ ॥१४॥ असौया सेनामरुतः परषानभ्यैतिन ऽओजसास्पर्द्ध-माना ताङ् गुहत तमसा पव्रतेनमथामीऽअ-न्योऽअन्न्यन्न जानत् ॥१५॥ यत्रवाणाः सम्पतति कुमारा विशिषा ऽइवतन्न ऽइन्द्रो-

बृहस्पतिरदितिः शर्म्मयच्छतु विश्श्वाहा शर्म्म-
यच्छतु ॥१६॥ मर्म्माणिते व्वर्म्मणा छादयामि
सोमस्त्वा राजा मृतेवस्त्वाम् उरोर्व्वरीयोव्व-
रुणस्ते कृणोतुजयंतन्त्वानुदेवामदन्तु ॥१७॥
(पुनः चतुर्थकलशेदक्षिणस्पर्शयामि)

फिर दक्षिण दिशा के चौथे कलश पर हाथ धरे। मन्त्र—

ओं नमस्ते रुद्रमन्न्यव ऽउतोतऽइषवे नमः
बाहुभ्याम्मुतते नमः ॥१॥ यातेरुद्र शिवा-
तनूर घोरा पाप काशिनीत यानस्तन्न्वाशं-
तमयागिरि शंतःभिचाकशीहि ॥२॥ यामि-
षुङ्गिरि शंहस्ते विभर्ष्य स्तवे शिवांङ्गिरि-
त्रताङ कुरुमाहिंᳫंसीः पुरुषञ्जगत् ॥३॥
शिवेनवचसात्वागिरिशाच्छावदाम सियथानः
सर्वमिञ्जगदयक्ष्मᳫं सुमना ऽअसत् ॥४॥
अद्भ्यवोच दधिवक्ता प्प्रथमो दैव्योभिषक
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयत्सर्वांश्च जातुधांयोध-
राचीः परासुव ॥५॥ असौयस्ताम्रो ऽअरुण
ऽउतबभ्रुः सुमङ्गलः ये च्चैनᳫं रुद्द्रा-

ऽअमितोदिक्षुश्रिताः सहत्रशोवैषा ᳪं हेडऽईमहे ॥६॥ असौयोव्व सर्प्पतिनीलग्ग्री बोबिलोहितोः उतैनङ्गो या ऽअदृ श्रन्नदृ श्रन्नुद हंर्य्यः सदृष्टोमृड यातिनः ॥७॥ नमोस्तु नीलग्ग्रीवाय सहस्राक्षाय मीदुषे अथोयेऽअस्य सत्त्वानोहंतेभ्योकरन्नमः ॥८॥ प्रमुञ्च धन्न्व नस्त्वमु भयोरात्क्र्योर्ज्याम् याश्चते हस्ते ऽइषवः पराताभगवोव्वय ॥६॥ विज्ज्यमंधनुः कपर्द्दिनो विशल्योबाणावां ऽउत अनेशन्नस्पया ऽइषव ऽआभुस्यनिष-ङ्गिधिः ॥१०॥ यातेहेतिर्म्मीदुष्टमहस्ते वभूवतेधनुः तयास्मान्न्वि शवतस्त्वमयक्ष्म-यापरि भुज ॥११॥ परितेधन्न्वनोहेतिरस-मान्न्वृणक्तु व्विश्वतः अथोयऽइषुधिस्तवारे ऽअस्मन्न्धेहितम् ॥११॥ अव तस्य धनुष्ट्रᳪं सहस्राक्ष शतेषुधेनिशीर्य्य शल्यना म्मुखशिवोनः सुमनाभव ॥१३॥ नमस्ते ऽआयुधाया ना तताय धृष्णवे उभाभ्या

मुतते नमोवाहुभ्व्यांत वधन्चने ॥१४॥
मानोमहांत मुतमानो ऽअर्भकम्मान ऽउक्षं
तमुतमान ऽउक्षितम् नानोवधीः पितरम्मोत
तमातरम्मानःप्प्रियास्तन्न्नोरुद्रोरीषिः॥१५॥
मानस्तोके तनयेमान ऽआयुषिव्यानोगोषुमा-
नो ऽअश्वेषरीरिषः मानोव्वीरान्नुरुइभामिनो
व्वधीर्ह विष्मंतः सदमित्त्वाहव्यामहे ॥१६॥

(पुनः पञ्चमकलशे स्पर्शयामि)

चारों कलशों के बीच के कलश पर हाथ धरे। मन्त्र—

ओं ऋचं वाचं प्रपद्ये मनो यजुः प्रपद्ये
साम प्राणं प्रपद्ये चक्षु श्रोत्रं प्रपद्ये वागोजः
सहौजो मयि प्राणापाना ॥१॥ यन्मेछिद्रं
चक्षुषो हृदयस्य मनसो वातितृणं बृहस्पति-
र्मेतदधातु शन्नोभवतु भुवनस्यपस्यतिः॥२॥
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥३॥
कयानश्चित्र आभुव दूति सदा वृद्धः सखा
कया शचिष्ठयावृता ॥४॥ कस्त्वा सत्यो

मदानामथ्ठं हिष्टौ मत्सदंधसः दृढा चिदा रुजेवसु ॥५॥ अभीषुणः सखि नामविता जरितॄणाम् शतम्भवारयूतिभि ॥६॥ कयात्वन्न उत्पाभिः प्रमदसेवृषन् कयास्तो तृभ्यः आभर ॥७॥ इन्द्रो विश्वस्य राजति शन्नो ऽअस्तु द्विपदेशञ्चतुष्पदे ॥८॥ शन्नो मित्रः शं वरुणः शन्नोभवत्वर्य्यमा शन्न इन्द्रो बृहस्पतिः शन्नोविष्णुरुरुक्रमः ॥६॥ शन्नो वातः पर्वताथ्ठं शन्नस्तपतु सूर्य्य शन्न कनिक्रदद्देव पर्ज्जन्यो अभिवर्षतु ॥१०॥ अहानि शं भवन्तु नः शथ्ठं रात्रिः प्रतिधीयताम् शन्न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्न ऽइन्द्रावरुणारातहव्या शन्न इन्द्रापूषणाव्वाजसातौशमिन्द्रा सोमा सुविताय शंय्यो ॥११॥ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्रवन्तु नः ॥१२॥ स्योनापृथिवीनोभवा नृक्षरानि वेशनी

यच्छानः शर्म्मसप्रथा ॥१३॥ आपोहिष्टा मयोभुवः स्तानउर्ज्जे दधातन महेरणाय चक्षुषे ॥१४॥ यो व शिव तमो रसरतस्य भाजयतेहनः उशती रिवमातरः ॥१५॥ तस्मा अरंगमाम वोयस्यक्षयाय जिन्वथ आपोजन यथाचन ॥१६॥ ॐ द्यौः शान्तिरंतरिक्षं शान्ति पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिर्व्वि-श्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व्वक्षं शान्तिः शान्तिरेव शान्ति सामा शांतिरेधि ॥१७॥ दृतेदक्षंहमा मित्रस्याहं चक्षुषा सर्व्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥१८॥ दृतेदृक्षं हा प्रज्योत्के संदृशिजीव्यासंज्योक्ते संदृशिव्याप्तम् ॥१९॥ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्च्चिषे अन्यांस्ते अस्मत्तर्पतु हेतयः षावका अस्मभ्य क्षं शिवोभव ॥२०॥ नमस्ते अस्तु विद्युते

नमस्तेस्तन यित्नवे नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्वसमीहसे ॥२१॥ यतोयतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु शन्नः कुरु प्रजाभ्यो ऽभयन्नः पशुभ्यः ॥२२॥ सुमित्रिया न ऽआपऽओष-धयः संतु दुर्म्मित्रियास्तस्मै संतु योऽस्मान द्वेष्टियं च वयं द्विष्मः ॥२३॥ तच्चक्षुर्दे-वहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात् ॥२४॥

अथ पूर्णपात्र दानम्

फिर चावलों का हंडला, अंगोछा, दक्षिणा ले। संकल्प करे—

ओं अद्येहेत्यादि ऽमुकगोत्रस्यपितुरमुक प्रेतस्य पञ्चकजनितदुर्मरण दोषोप शांत्यर्थं पञ्चकशान्ति होम कर्मणि कृताकृतावेक्षण ब्रह्मकर्म प्रतिष्ठार्थमिदं तंदुलपूर्णपात्रं प्रजा-

पतिदैवतं अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे

(स्वस्ति प्रति वचनम्) ब्राह्मण स्वस्ति कहे।

(ततो ब्रह्मा ग्रन्थि विमोकः)

वह जो कुशा का ब्रह्मा अग्नि के समीप धरा है उसकी गाँठ खोल दे। मन्त्र—

ओं सुमित्रिया नः आपः औषधयः संतुः।

(पुनः पवित्रे गृहीत्वा प्रणीताजलेन शिरः संमृज्य)

कुशा का पवित्रा लेकर प्रणीता के जल से यजमान के ऊपर ींटा दे। मन्त्र—

ओं दुर्मित्रिया स्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्म ॥२॥

(इत्यैशान्यां प्रणीतान्युब्जीकरणं)

ईशान दिशा में प्रणीता पात्र को उल्टा कर दे।

(ततः परिस्तरणं) प्रणीता के ऊपर कुशा धर देवे।

(पुनः मंत्रेणबर्हि होमः)

वेदी के चारों तरफ की कुशा और पवित्रा उठा कर हवन में ार दे।

ओं देवागातुविदोगातुं वित्वागातुमितमन-सस्पतइमदेवयज्ञꣳ स्वाहा वातेधाः स्वाहा।

(इन्द्रादिदशदिग्पालेभ्योदधिदीप माषान्नेन बलिदानं तत्र मन्त्रा)

इन्द्र देवता से लेकर दस दिग्पालों के पूजन के लिए दस बत्ती पूजा की वेदी के चारों तरफ जला दे और उनके पास थोड़ी-थोड़ी उड़द की दाल, दही और सिन्दूर रख दे। पहिले पूर्व में इन्द्र का पूजन करे अर्थात् रोली का छींटा लगावे, सब सामग्री चढ़ावे, फिर हाथ जोड़े। मन्त्र–

ओं त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवे हवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम् व्हयामि शक्रम्पुरुहूत मिन्द्रꣳ स्वस्तिनो मघवाधात्विन्द्रः।

अग्निकोण में पूजन करे फिर हाथ जोड़े। मन्त्र–

ओं अग्निन्दूतम् पुरोदधे हव्यवाह मुपब्रवे देवान् आसा दयादिह। दक्षिण में पूजन करे। मन्त्र–

ओं यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्य्यस्य त्वा तपसे। देवस्त्वा सविता मद्ध्वानक्तु पृथिव्याः सꣳस्पृशस्पाहि आचिरसिशो चिरसितपोहि।

नैऋत्य कोण में पूजन करे।

ओं एषते नैर्ऋतेर्भागस्त्वं जुषस्व स्वाहा

अग्निनेत्रेभ्यो देवेभ्यः पुरः सद्भयः स्वाहा यमनेत्रेभ्यो देवेभ्यः दक्षिणा सद्भयः स्वाहा विश्वदेवनेत्रेभ्यो देवेभ्यः पश्चात्सद्भयः स्वाहा मित्रा वरुण नेत्रेभ्यो वामोरु नेत्रेभ्यो वाम देवेभ्यः उत्तरा सद्भयः स्वाहा सोमनेत्रेभ्यो देवेभ्यः उपरि सद्भयः दुवः स्वन्तस्तेभ्यः स्वाहा। पश्चिम दिशा में पूजन करे।

ओं एहोहिया दागण वारीध नांगणेप्यर्य्य नमहाशर शोभिविद्याधरेंद्रो मरगी व्यमानः याहिङ्गूव वमस्मान भगवन् नमस्ते।

फिर वायव्य कोण में पूजन करे।

ओं वातोवमिनौ गन्धर्वा॑ंसप्तवि॑ंशांतिः ते अग्रेअश्वमयुञ्जस्ते अस्मिन्जव मादधुः।

उत्तर में पूजन करे।

ओं कुविदं गयवमन्तोयवञ्चिद्यथा दांत्यनुपूर्वं वियूयइहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषनामः उक्तिम् यजन्ति। फिर ईशान कोण में पूजन करे।

ओं ईशावास्यमिद॑ं सर्वंयत्किञ्चिज्जगत्यां

जगत् । तेनत्यक्तेनभुञ्जीथा मागृधः कस्य स्विद्धनम् । फिर पाताल में पूजन करे ।

ओं नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु । ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।

आकाश में पूजन करे ।

ओं ब्रह्म यज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः । सबुध्न्या उपमा अस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विव ।

(पुनः क्षेत्रपाल दानम्)

फिर क्षेत्रपाल का दान करे अर्थात् चून का चौमुखा दीवा बाल कर उस पर उड़द की दाल और दही सिन्दूर रख दे उसकी प्रतिष्ठा पूजन करे सब सामग्री चढ़ावे फिर हाथ जोड़े । मन्त्र–

ओं करकलित कपालः कुण्डलीदण्ड पाणि-स्तरुणति मिरनीलव्यालयज्ञोपवीती । क्रतु समय सपर्या विघ्न विच्छेद हेतुर्जयति बटुक नाथः सिद्धिदः साधकानाम् ।

(क्षेत्रपाल संकल्पम्)

फिर पैसा जल चावल लेकर संकल्प करे ।

अद्याऽमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य पञ्चक

शांतिजनित दुर्मरणदोषोपशांत्यर्थ भो क्षेत्रपालाः दिशो रक्षतबलिंभक्षत मम यजमानस्य सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्तारः क्षेमकर्तारः शान्ति कर्तारस्तुष्टि कर्तारः पुष्टिकर्तारो वरदो भव ।

दीवे को वहां से उठा दे और जल का छींटा देवे।

ओं अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोपि वा । यः स्मरेत पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यंतरः शुचिः ।

(स्रुवोपरि फलपुष्पताम्बूलचरु समन्वितम् पूर्णाहुतिं दद्यात्)

स्रुवे पै घी का भरा नारियल, पान, सुपारी, फूल, चावल आदि सब सामग्री धरे, प्रतिष्ठा और पूजन कर यजमान ब्राह्मण के सीधे कन्धे पर अपना सीधा हाथ धर ले, कुछ दक्षिणा ले ब्राह्मण स्रुवे को लेकर खड़ा हो जाय। मन्त्र–

ओं पूर्णादिर्वि परापतसुपूर्णानरापत । वस्नेव विक्रीणा वहाइष मूर्ज्जꣳ शतक्रतो स्वाहा ।

उसको अग्नि में छोड़ दे फिर घी की आहुति दे। मन्त्र–

(१) प्राणेभ्य स्वाहा । (२) साधिपतिकेभ्यः स्वाहा । (३) पृथिव्यै स्वाहा । (४) अग्नये

स्वाहा। (५) अन्तरिक्षाय स्वाहा। (६) वायवे स्वाहा। (७) देवेभ्यः स्वाहा। (८) सूर्याय स्वाहा। (९) दिग्भ्यः स्वाहा। (१०) चन्द्राय स्वाहा। (११) नक्षत्रेभ्यः स्वाहा। (१२) अद्भ्यः स्वाहा। (१३) वरुणाय स्वाहा। (१४) नाभ्यः स्वाहा। (१५) पूताय स्वाहा।

घी की धार दे।

ओं वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारं देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्ष स्वाहा।

(संस्रव प्राशनम्)

यजमान थोड़ा सा घी स्रुवे पै से अनामिका अंगुली से खाले।

(ततः पञ्चकलशोदकेन सपरिवारस्य यजमानस्योपरिअभिषेकं कुर्यात्)

पांचों कलशों में से कुशा से यजमान और उसके कुटुम्बियों के ऊपर थोड़ा-थोड़ा सा जल का छींटा दे पहले पूर्व दिशा के कलशे से—

ओं आपोहिष्ठा मयोभुव स्तान ऊर्जे

दधातन महेरणाय चक्षसे यो वः शिव-तमोरसस्तस्यभाजयतेहनः उशतीरिवमातर तस्माऽअरङ्ग मामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपोजन यथाचन ॥१॥

दूसरे उत्तर दिशा के कलश में से छींटा दे। मन्त्र–

ओं शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्रवन्तु नः।

तीसरे पश्चिम दिशा के कलशे में से छींटा दे।

सहस्रशीर्षापुरुषःसहस्राक्षःसहस्रपात्सभू-मिꣳ सर्व्वत स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम् ॥१॥

चौथे दक्षिण दिशा के कलश में से छींटा दे। मन्त्र–

ओं आशुशि शानोवृषभोन भीमो घनाघन शोभणपूच्चर्षणीनाम्। सक्रन्दनो निमिषएकवीरꣳसेनाअजयत्साकमिन्द्र॥१

पाँचवें बीच के कलशे में से छींटा दे। मन्त्र–

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतय शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व्व

ॐ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्ति रेधि ।

फिर यजमान के ऊपर वरुण के कलश में से छींटा दे । मन्त्र-

ॐ सुप्रोक्षमस्तु शिवा आपः सन्तु सोमनस्य-मस्तु । अक्षतं चारिष्टमस्तु यत्पापरोगंतद्दूरे प्रतिहतमस्तु द्विपदेचतुष्पदे शान्तिरस्तु ।

(त्र्यायुष करणम्)

स्रुवे से भस्म लगाकर अनामिका से यजमान के लगावे ।

त्र्यायुषं जमदग्निरितिललाटे

माथे के ऊपर लगावे ।

कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम् गले पै लगावे ।

यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिण बाहुमूले

कन्धों के ऊपर लगावे ।

तन्नो✡ अस्तु त्र्यायुष मितिहृदि छाती से लगावे ।

(पुनः गोदानं कर्त्तव्यम्)

पैसा, जल, चावल लेकर संकल्प करे ।

ॐ अद्येहेत्यादि अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुक-प्रेतस्य पञ्चक जनितदुर्मरणदोषोपशान्त्यर्थं

✡यजमान के भस्मी लगावे तो तन्नो की जगह तत्तेऽस्तु ऐसा कहे

मम गृहे सपरिवारस्यायुरारोग्यसुख श्री प्राप्त्यर्थ इमां कपिलां कांचन शृङ्गीं रोप्यखुरांकांश्यदोहांवस्त्राच्छादितांघण्टाभरणंभूषितां ऋग्वेदमयीं सर्वतीर्थ मयीं रुद्राणां मातरम् वसूनां दुहितारं आदित्यानां बलग्रम् सर्वदानेषु तमोत्तमां सर्वदेवमयी कुंकुमाद्यनु गंधैरर्चितांमहानदी उत्तारणार्थं धर्मराजप्रीत्यर्थं शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थंयथानामगोत्रायऽमुकशर्मणे महाब्राह्मणायपञ्चक शान्तिप्रतिष्ठासिध्यर्थं इमां रुद्रधेनुं तुभ्यमहं संप्रददे।

महाब्राह्मण को दे दे, ब्राह्मण स्वस्ति कहे।

(गोदान प्रतिष्ठांसंकल्पंकर्त्तव्यम्)

एक रुपया, जल, चावल लेकर संकल्प करे। मन्त्र—

अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुक प्रेतस्य स्वर्ग लोक प्राप्ति कामः धेनु प्रतिष्ठासिध्यर्थं ताम्रमर्कदैवतम्यथानाम गोत्रायअमुक शर्मणे महाब्राह्मणायतुभ्यमहं संप्रददे।

पंचब्राह्मणभोजयेत। पांच ब्राह्मणों को जिमावे।

॥ इति पंचक शान्ति समाप्तम् ॥

लेजर टाईप सैटिंग : क्रिएटिव कम्प्यूटर प्वाइंट, मेरठ। दूरभाष : ७६९३५३

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh